राष्ट्रीय सहारा नई दिल्ली । सोमवार • 16 नवम्बर • 2009

# नहीं दिखेंगे 'झूम' खेती के मनोरम दृश्य

संजय सिंह/ एसएनबी

नई दिल्ली। पूर्वोत्तर के पहाड़ों पर दिखने वाले 'झूम खेती' के मनोरम दृश्य कुछ ही दिनों में किताबों की बातें हो जाएंगी। वहां के किसानों को इन दिनों फलों और फूलों की खेती करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। झूम खेती के लिए बड़े पैमाने पर पेड़ों के कटने से पर्यावरण को नुकसान हो रहा है। इसलिए केंद्र सरकार ने पूर्वोत्तर के राज्यों को झूम खेती जल्द से जल्द खत्म करने के लिए कहा है। कुछ राज्यों ने इस पर अमल भी शुरू कर दिया है।

पूर्वोत्तर के सातों राज्यों में सबसे बड़ा राज्य मिजोरम है। मिजोरम के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) एमएम लखेड़ा ने *'राष्ट्रीय सहारा'* से खास बातचीत में कहते हैं, 'पर्यावरण को बचाने के लिए उनके राज्य में झूम खेती को खत्म करने के लिए किसानों को प्रेरित करने का अभियान चलाया जा रहा है। उन्हें परंपरागत खेती के स्थान पर फल के पेड़ लगाने के लिए कहा जा रहा है।' पूर्वोत्तर में एक पैशन फ्रूट नामक फल भी बहुतायत में होता है जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में खासी मांग है। झूम खेती के बदले में इस फल की खेती करने के लाभ किसानों को बताए जा रहे हैं। अनानास की खेती भी बहुत फायदेमंद है। गुलाब और अन्य पहाड़ी फूल के साथ जड़ी-बूटियों की खेती भी झूम खेती का अच्छा विकल्प बन सकती है। मिजोरम के कुछ किसानों ने इसे उगाना शुरू भी कर दिया है।

■पर्यावरण के लिए नुकसानदायक है झूम खेती

■एक दो वर्षों में पूरी तरह खत्म हो जाएगी यह पद्धति

श्री लखेड़ा ने स्वीकार किया कि मिजोरम में म्यांमार सीमा से लगे चंपाई जिले के किसानों ने तो झूम खेती पूरी तरह बंद कर दिया है। अब वे अपनी जमीन पर अंगूर की खेती कर रहे हैं। वह कहते हैं कि झूम खेती से पेड़ कटते हैं और पर्यावरण प्रभावित होता है।

दरअसल, झूम खेती में मुख्यतः धान और मक्के की खेती होती है। पूर्वोत्तर के राज्यों में साल में तकरीबन छह-सात माह तक बरसात होती है। यह बरसात झूम खेतों की मिट्टी को बहाती है। त्रिपुरा में भी झूम खेती खत्म करने के लिए राज्य सरकार ने तेजी से प्रयास शुरू कर दिए हैं। वहां के किसानों ने राज्य सरकार की अपील को स्वीकार कर परंपरागत झूम खेती को बंद करना शुरू कर दिया है। श्री लखेड़ा कहते हैं कि पूर्वोत्तर के राज्यों से झूम खेती पूरी तरह खत्म होने में एक-दो साल तो लग ही जाएंगे।